

ISBN 978-81-7450-898-0 (काळा-πेट) 978-81-7450-882-9

यक्षम संस्करण : अन्त्वर 2008 कार्तिक 1930 युनर्सुद्रण : दिसंबर 2009 पीए 1931 © राष्ट्रीय रीतिक अनुमंधान और प्रशिक्षण परिवर, 2008 PD HIT NSY

# पुरवक्षमाला निर्माण समिति

कंचन संटों, कृष्ण कुधार, ज्योंन संटों, दुलदुल विश्वास, मुकेश माळबांब, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लेशा पाण्डे, स्वार्गत वर्मा, सारिका वर्शाण्ड, सीमा कुभारी, सोनिका कॉशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्त्रपंक - लविका गुप्ता

चित्रांकन - निधि धरधवा

स्टन्म तथा आवरण - निधि वाधवा

डी.ची.मी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, अंशुल मुख्ड, सीमा पाल

## आभार जापन

त्रेकेसर कृष्ण कृष्णर, निर्देशक, राष्ट्रांय श्रीक्षक अनुसंधान और प्रांशक्षण परिषद, 'नई दिल्ली; प्रांफेसर वसुधा कामश्च, मधुका निरंशक, केन्द्रांच श्रीक्षक प्रदेशीनकी संस्थान, राष्ट्रांच श्रीक्षक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 'ई दिल्ली; प्रांफेसर के, के, चिशक, निर्माणध्यक्ष, प्रार्थिक शिक्षा विभाग, सप्ट्रांच श्रीक्षक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोक्षेक्षर रामण्यक्ष, थाना विभाग, सप्ट्रांच श्रीक्षक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोक्षेक्षर मंजुला माशुर, अध्यक्ष, श्रीक्रंग देवलीममेंट सेल, सप्ट्रींच श्रीक्षक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

## राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अस्ताक ब्राजनेथी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महास्था गांधी अंतरोष्ट्रीय हिंदी विस्त्रविद्यालय, वधी; प्रोफेसर परीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाण्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; इ. अपूर्वानेद, रीडर, हिंदी विभाग, विल्ली विस्त्रविद्यालय, दिल्ली; इ. श्रावनय सिन्दा, सी.ई.ओ., आई.एस. एकं एफ.एस., पुंबई: सुझे नुनाहद इसन, निदेशक, नेशनल युक्त इस्ट, नई दिल्ली; औ तीहत धनकर, निदेशक, दिगंका, जमपर।

io जो एक एवं वेश का महिला

प्रकारान्य विभाग में प्रतिवद्य, राष्ट्रीय शीधक अनुस्थान और प्रतिवद्या गरिगद्, औ आजिन्द्र कर्म, जो दिल्ली 1168116 द्वारा प्रकारित तथा पंकार विटिंग ग्रेस, दी-28, श्रेटस्ट्रिक्ट ग्रेस्स, साइट-प्, मभूरा 281648 द्वारा मुद्रित। बरका अमिक पुस्तकमाना पहली और दूसरी कथा के बन्तों के लिए हैं। इसका उद्देश बन्नों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ेने के मौके देना हैं। बरका को कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथायस्तुओं में विस्तारित हैं। बरका को कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथायस्तुओं में विस्तारित हैं। बरका बन्तों को स्वयं की खुशों के लिए पहने और स्थायों पाटक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज्यर्त की छंटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगतों हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुरतकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रमुर मात्रा में किताब मिला। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पढ़नचाँ के हरेक क्षेत्र में संज्ञनात्मक लाभ मिलोगा। शिक्षक बरका को हमेशा कथा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताब उटा सके।

## सर्वाधिकार न्हांशत

प्रकाशक को पूर्वअनुनति के चिन इस प्रकाशन के किसी भाग को डापन तथा इलेक्स्निनेसी, मण्डेले, जोटोइन्हिलीप, रिकार्डिक अध्या किस्ने अध्या विधि से पुनः प्रयोग क्यूनिहास उसका साहण अधना प्रधानन के किसी है।

#### एग.संबर्ड.आर.टी. के इकाशन किमान के कार्यास्त्र

एन भी.ई.आय.डो. केंक्स, भी अजॉबर, पार्ग, तुनी दिल्ली 110 काठ - क्येन 1 011-36562 108 108, 100 कोट रोग, होती एकक्टेशन, बेन्ब्वेकेंट, बन्तरकार्ग III क्येब, बेनबुह 560 660 कोच 1 680-26725746

्यमकोषा दुस्य भ्रमन, उद्धारम प्रथमित असम्बन्धाः ३६० ०१४ फोन : ०२० २२५४।४४६ मि.उपन्युक्ता जैयास, निकटः धर्मकल कम प्योग पनिकरी, फोन्स्कला २४६ ११४ फोन : ०३३-२५५,४४८४

सी.डब्स्यु.सी. कोम्प्लेस्य, वामीसीत, मुखायती २३। ४८। फ्रीम : साठा -३५८३३०)

#### प्रकारक सहयोग

सध्यक्ष, प्रकारान विभाग : ग्री नाजाकुराव भूतिय संगादक : स्वीतर उप्यत्म मुख्य उत्पन्न अभिकाने : क्रिय कुन्सर भुख्य व्यापा प्रचेतक : शीन्य ग्रमुनी

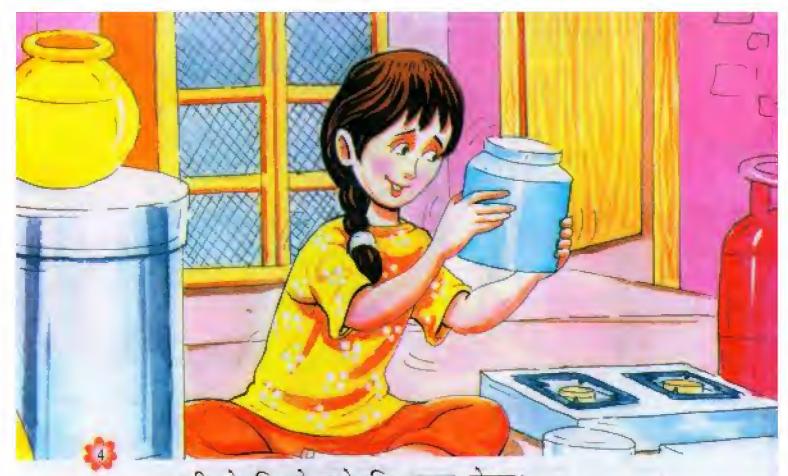




एक दिन बबली के घर में सफ़ाई हो रही थी। सारे घर का सामान आँगन में निकला हुआ था। रसोई का सामान भी आँगन में ही था।



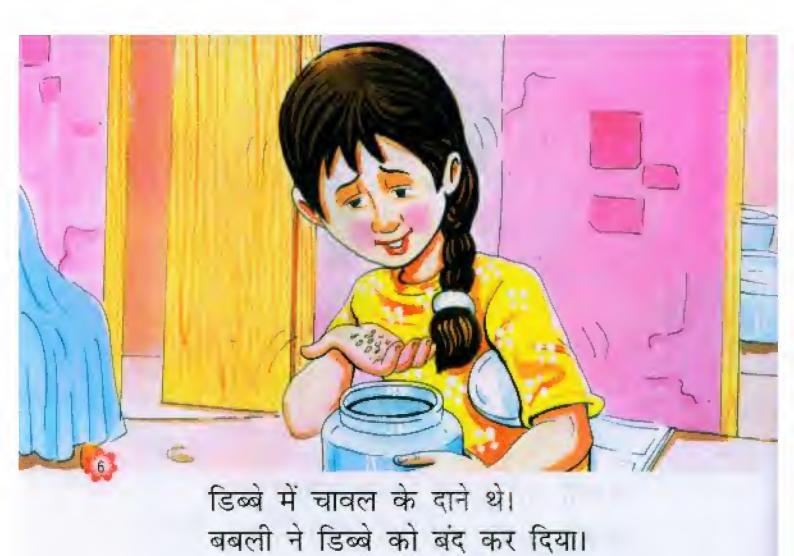
रसोई के सामान में बहुत सारे डिब्बे निकले थे। बबली डिब्बों के ढेर के पास बैठ गई। बबली ने अपने लिए एक नीला डिब्बा उठा लिया।



बबली ने डिब्बे को हिलाकर देखा। डिब्बा हिलाने पर छन्न-छन्न की आवाज आई। बबली ने डिब्बे को खूब बजाया।



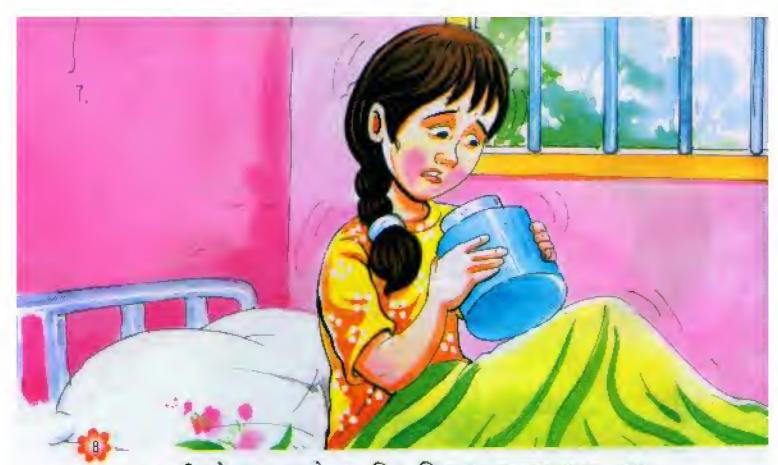
उसने डिब्बा खोलकर देखा।



पहले की तरह उसे बजाती रही।



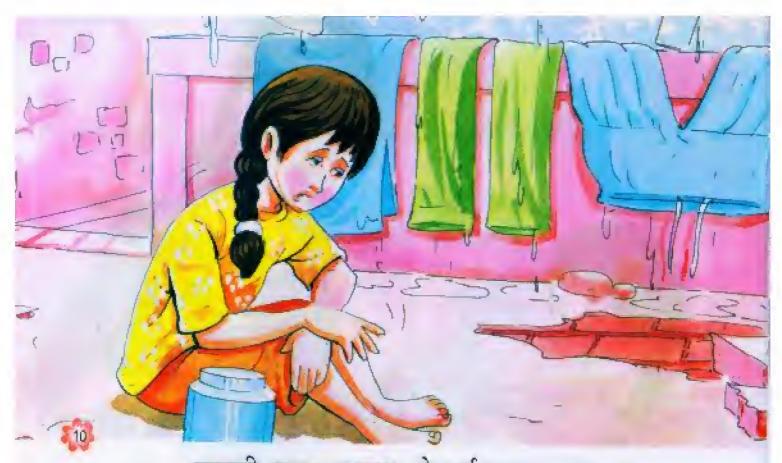
बबली डिब्बे को अपने साथ लेकर सोई। रात को बबली के बिस्तर पर एक चूहा आया। चूहा डिब्बे के सारे चावल खा गया।



बबली ने सुबह देखा कि डिब्बा खुला पड़ा था। चावल के दाने गायब थे। उसने माँ से और चावल माँगे।



माँ ने चावल देने से मना कर दिया। माँ बोली चावल खेलने की चीज नहीं है। चावल तो खाने के लिए होता है।

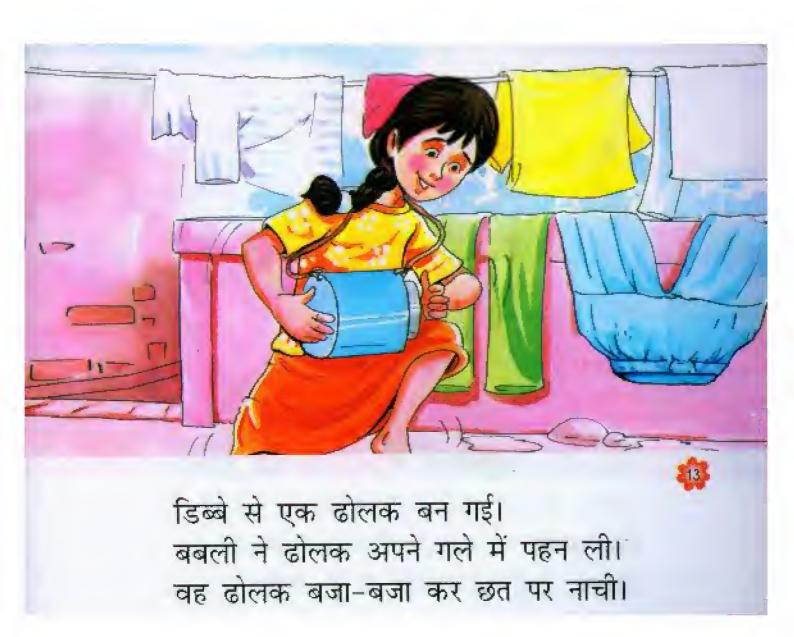


बबली बहुत उदास हो गई। वह छत पर जाकर बैठ गई। वहाँ धुले हुए कपड़े सूख रहे थे।



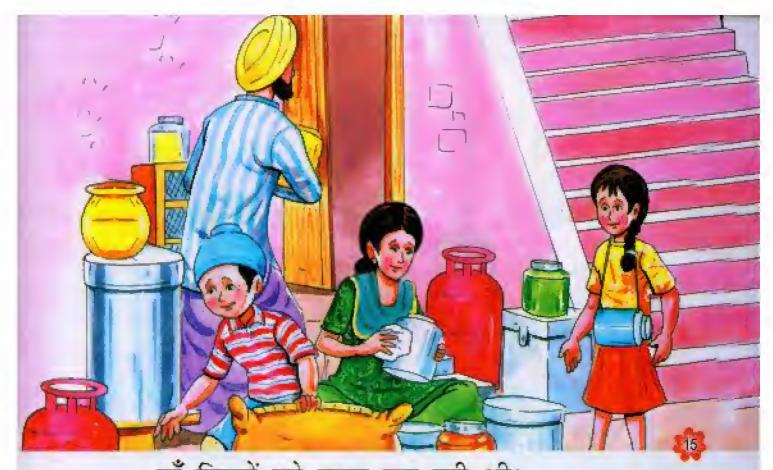


बबली ने नाड़ा खींचकर निकाल लिया। उसने नाड़े का एक सिरा डिब्बे से बाँध दिया। नाड़े का दूसरा सिरा डिब्बे के दूसरी तरफ़ बाँध दिया।

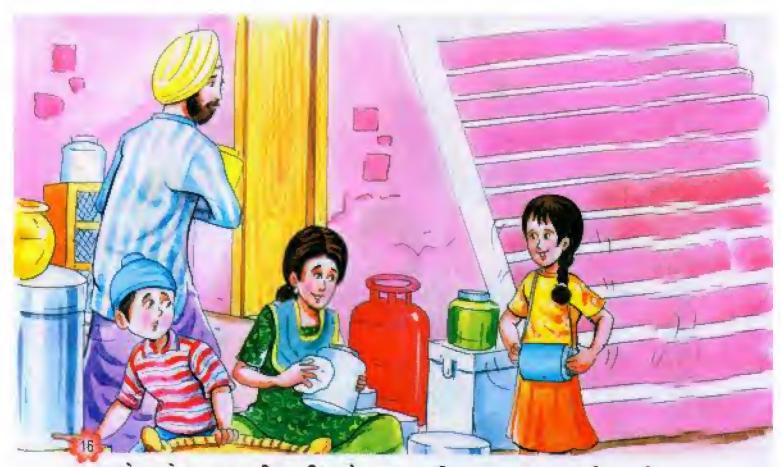




बबली ढोलक बजाते हुए नीचे उतरी। नीचे अभी भी सफ़ाई हो रही थी। सामान अभी भी आँगन में ही पड़ा हुआ था।



माँ डिब्बों को साफ़ कर रही थी। पापा डिब्बों को अंदर ले जाकर रख रहे थे। जीत सामान में कुछ ढूँढ़ रहा था।



सारे लोग बबली की ढोलक की आवाज सुनने लगे। ढप-ढप-ढप-ढप-ढप-ढप-ढप बबली गाना भी गा रही थी।







2081



₹. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING